- दूसरा, **भारत न तो एक महान शक्ति था, और न ही वह स्वयं को किसी ऐसे राष्ट्र के रूप में पेश कर सकता था जिसका कोई महत्व न हो**। हालांकि, भारत संभावित रूप से एक महान शक्ति था। गुट-निरपेक्षता, भारत की "अपनी राष्ट्रीय पहचान को अलग रखने की वर्तमान जरूरतों" के अनुकूल थी तथा दूसरी ओर इसे, "एक स्वीकृत महान शक्ति की भावी भूमिका से समझौता नहीं करना पड़ रहा था।" गुट-निरपेक्षता भारत के लिए उपयुक्त थी क्योंकि एक ओर यह भारत की अपनी राष्ट्रीय पहचान को बनाए रखने की तत्कालीन आवश्यकताओं के अनुकूल थी तथा दूसरी ओर, भारत को एक स्वीकृत महान शक्ति के रूप में अपनी भावी भूमिका के साथ कोई समझौता नहीं करना पड़ रहा था।
- तीसरा, **भारत भावात्मक तथा सैद्धांतिक कारणों से किसी भी शक्ति समूह का सदस्य नहीं बन सका**। हम पश्चिमी (अमेरिकी) गुट से इसलिए नहीं जुड़े क्योंकि इसके कई सदस्य राष्ट्र औपनिवेशिक शक्तियाँ या पूर्व-औपनिवेशिक शक्तियाँ थे, और कुछ राष्ट्रों में अभी भी नस्लीय भेदभाव का चलन था। हम पूर्वी (सोवियत) गुट से इसलिए नहीं जुड़े क्योंकि एक विचारधारा के रूप में साम्यवाद, भारतीय सोच तथा जीवन-पद्धति के लिए, पूर्ण रूप से विदेशी था।
- चौथा, **किसी भी संप्रभु राष्ट्र की तरह ही, भारत भी, जो अभी-अभी संप्रभु बना था, निर्णय लेने की अपनी स्वतंत्रता को कायम रखना चाहता था तथा इसका उपयोग करना चाहता था**, न कि किसी अन्य राष्ट्र का पिछलग्गू बनना चाहता था। इसका तात्पर्य यह था कि भारत अपनी योग्यता के आधार पर प्रत्येक मुद्दे पर निर्णय लेने की स्वतंत्रता चाहता था।
- पांचवां, **जब भारत ने आर्थिक विकास योजनाएं प्रारंभ की, तो हमें विदेशी आर्थिक सहायता की आवश्यकता थी**। "यह **केवल एक ही गुट पर सहायता के लिए निर्भर ना रहने के लिए एक ओर राजनीतिक रूप से वांछनीय था** तो दूसरी ओर एक से अधिक स्रोतों से सहायता प्राप्त करने में सक्षम होने के लिए लाभदायक भी था।"
- छठा, गुट-निरपेक्षता, **भारत की पारंपरिक धारणा के अनुसार थी कि "सत्य, न्याय तथा कल्याण" पर किसी एक धर्म या दर्शन का एकाधिकार नहीं है**। भारत सहिष्णुता में विश्वास रखता है। इसलिए, दोनों प्रणालियों के मध्य सहिष्णुता तथा शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व की मांग करने वाली वैश्विक परिस्थिति के लिए आवश्यक था कि भारत न तो किसी गुट के साथ गठबंधन करे और न ही उनके विरुद्ध हो।
- और अंत में, **गुट-निरपेक्षता की नीति को अपनाने के लिए घरेलू राजनीतिक परिस्थितियाँ भी उत्तरदायी थीं**। प्रोफेसर राजन के अनुसार, "भारत को किसी भी एक गुट के साथ मिलाकर, भारत सरकार राष्ट्र में राजनीतिक विवाद तथा अस्थिरता के बीज बो सकती थी..."

नेहरू तथा उनकी सरकार को गुट-निरपेक्षता की नीति को अपनाने के चाहे जो भी वास्तविक कारण रहें हों, यह स्पष्ट है कि **भारत के लोगों ने कुल मिलाकर नीति का समर्थन किया**। कई अन्य राष्ट्रों ने इस नीति को अपनाना अपने राष्ट्रीय हित में पाया, जिससे गुट-निरपेक्ष आंदोलन की स्थापना हुई।

VISION IAS